International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

स्वच्छ भारत मिशनः ग्रामीण स्वास्थ्य, कार्य क्षमता और सतत विकास का परस्पर संबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन

वेदप्रकाश योगी[1]
शोधार्थी
आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबंधन विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

डॉ. ऋचा सिंघल[2]
एसोसिएट प्रोफेसर
आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबंधन विभाग
एस. एस. जैन सुबोध पी. जी. कॉलेज जयपुर

सारांश:
यह शोध–पत्र स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता सुधारों के स्वास्थ्य, कार्य क्षमता और सतत विकास पर पडने वाले प्रभावों का विश्लेषण करता है। ग्रामीण भारत में लंबे समय तक स्वच्छता की कमी, खुले में शौच, गंदे जलस्रोत और अपशिष्ट प्रबंधन की कमजोरियाँ स्वास्थ्य समस्याओं एवं आर्थिक नुकसान का कारण रही है। स्वच्छ भारत मिशन ने इन चुनौतियों से निपटने के लिए सामुदायिक भागीदारी, अवसंरचना निर्माण और व्यवहारगत परिवर्तन पर विशेष बल दिया है।
अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वच्छता सुधारों ने ग्रामीण जनसंख्या में जलजनित एवं संक्रामक रोगों की दर को घटाया, जिससे स्वास्थ्य खर्च में कमी आई और श्रमशक्ति की कार्य क्षमता बढी। बेहतर स्वास्थ्य एवं उत्पादकता ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाया और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में सहयोग किया। प्रस्तुत शोध यह भी रेखांकित करता है कि स्वच्छता, स्वास्थ्य और आर्थिक प्रगति एक–दूसरे के पूरक है।
निष्कर्षतः स्वच्छ भारत मिशन न केवल एक स्वच्छता कार्यक्रम है, बल्कि यह ग्रामीण भारत में मानव पूंजी निर्माण, सामाजिक परिवर्तन और दीर्घकालीन सतत विकास की आधारशिला के रूप में कार्य कर रहा है।

मुख्य शब्दः स्वच्छ भारत मिशन, ग्रामीण स्वास्थ्य, कार्य क्षमता, सतत विकास, स्वच्छता, ग्रामीण विकास, सामुदायिक भागीदारी।

परिचय

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता की समस्या लंबे समय से सामाजिक एवं आर्थिक विकास की राह में बडी बाधा रही है। खुले में शौच, सुरक्षित पेयजल की कमी, कचरा प्रबंधन की अव्यवस्थित व्यवस्था तथा स्वच्छता के प्रति जागरूकता की कमी ने न केवल ग्रामीण जीवन–स्तर को प्रभावित किया है, बल्कि स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों को भी बढाया है। परिणामस्वरूप, ग्रामीण श्रमशक्ति का एक बडा हिस्सा बीमारियों से ग्रस्त होकर अपनी कार्य क्षमता खो देता है, जिससे उत्पादकता और आय स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पडता है।

इन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2014 में भारत सरकार ने श्स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की, जिसका मुख्य उद्देश्य खुले में शौच को समाप्त करना, ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ करना, तथा ग्रामीण और शहरी भारत को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाना था। यह मिशन मात्र स्वच्छता तक सीमित न होकर सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप स्वास्थ्य सुधार, मानव पूंजी निर्माण और आर्थिक प्रगति की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ है।

स्वच्छता और स्वास्थ्य के बीच प्रत्यक्ष संबंध है। स्वच्छ वातावरण न केवल संक्रामक रोगों की रोकथाम करता है, बल्कि ग्रामीण जनसंख्या की कार्य क्षमता और उत्पादकता को भी बढाता है। स्वस्थ और सक्षम श्रमशक्ति ही सतत आर्थिक

विकास की नींव होती है। इस प्रकार, स्वच्छ भारत मिशन का प्रभाव बहुआयामी है यह ग्रामीण स्वास्थ्य को सुदृढ करता है, कार्य क्षमता में वृद्धि लाता है, और अंततः सतत विकास की दिशा में देश को आगे बढाता है।
इस शोध–पत्र में स्वच्छ भारत मिशन के इन तीनों पहलुओं– ग्रामीण स्वास्थ्य, कार्य क्षमता तथा सतत विकास के बीच परस्पर संबंध का विश्लेषण किया गया है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि स्वच्छता सुधार किस प्रकार सामाजिक आर्थिक परिवर्तन और दीर्घकालिक विकास के कारक बनते हैं।

साहित्य समीक्षा

कुमार (2016) ने अपने अध्ययन में उल्लेख किया कि ग्रामीण भारत में स्वच्छ भारत मिशन लागू होने के बाद शौचालय निर्माण में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है. जिससे जलजनित रोगों की दर में कमी आई है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव ग्रामीण श्रमशक्ति की कार्य क्षमता पर देखा गया।

शर्मा एवं वर्मा (2018) के शोध के अनुसार, स्वच्छ भारत मिशन केवल एक स्वास्थ्य कार्यक्रम नहीं बल्कि सामाजिक आंदोलन के रूप में कार्य कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप लोगों के जीवन स्तर, शिक्षा, पर्यावरणीय जागरूकता तथा कार्य संस्कृति में सकारात्मक बदलाव आए हैं।

नीति आयोग (2019) की रिपोर्ट में यह बताया गया है कि स्वच्छ भारत मिशन ने सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति, विशेषकर स्वास्थ्य एस. डी. जी. 3, स्वच्छ जल एवं स्वच्छता एस. डी. जी. 6 और सतत समुदायों एस. डी. जी. 11 की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

गुप्ता (2020) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन ने स्वास्थ्य व्यय को घटाकर किसानों और मजदूरों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ किया है, जिससे उनकी आय और कार्य क्षमता दोनों में वृद्धि हुई।

शोध के उद्देश्य

1. स्वच्छ भारत मिशन के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
2. स्वच्छ भारत मिशन का ग्रामीण स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. स्वच्छ भारत मिशन का ग्रामीण कार्य क्षमता पर पडने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना।
4. स्वच्छ भारत मिशन का सतत विकास के साथ संबंध स्थापित करना
5. स्वच्छ भारत मिशन के सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन का मूल्यांकन करना
6. स्वच्छ भारत मिशन की चुनौतियों एवं सीमाओं की पहचान करना।

शोध प्रविधि

इस शोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। यह एक वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन है, जिसमें ग्रामीण भारत के चयनित क्षेत्रों को अध्ययन क्षेत्र बनाया गया। प्राथमिक डेटा प्रश्नावली, व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष अवलोकन से प्राप्त किया गया, जबकि द्वितीयक डेटा सरकारी रिपोर्टी अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की प्रकाशन सामग्री, शोध पत्रिकाओं और पुस्तकों से संकलित किया गया। नमूना चयन हेतु यादृच्छिक पद्धति अपनाई गई तथा डेटा के विश्लेषण में प्रतिशत, तुलनात्मक एवं विषयवस्तु विश्लेषण का उपयोग किया गया। अध्ययन की कुछ सीमाएँ यह रहीं कि शोध केवल कुछ चयनित क्षेत्रों तक सीमित रहा तथा उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत धारणाएँ परिणामों को प्रभावित कर सकती है।

आंकडों का विश्लेषण

जयपुर संभाग के अंतर्गत स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत ओ डी एफ प्लस मॉडल गांव के संदर्भ में विश्लेषण

जिला	स्वच्छ भारत मिशन गांव की संख्या	ओ डी एफ प्लस गांव की संख्या	ओ डी एफ प्लस मॉडल गांव की संख्या
जयपुर	1879	1844	1783
अलवर	1090	1067	1062

दौसा	1087	1058	1047
झुंझुनूं	976	969	966
सीकर	1192	1185	1183

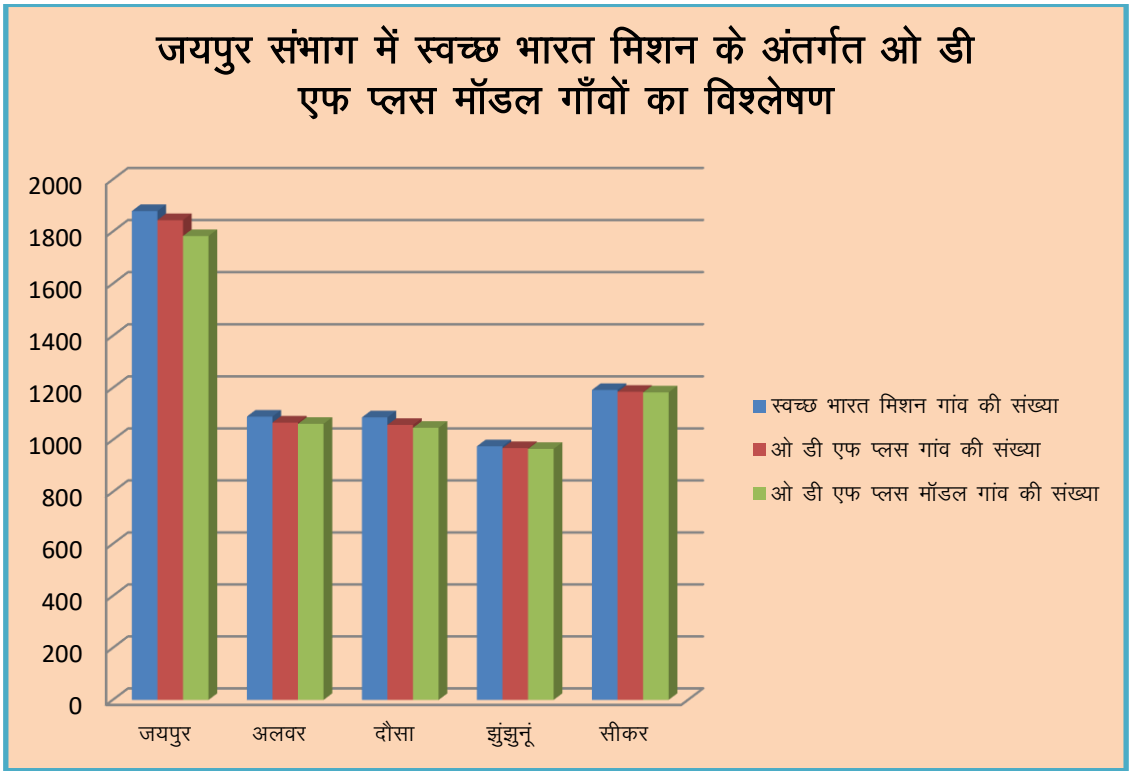

उपरोक्त तालिका अनुसार जयपुर संभाग के आँकडों से यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वच्छ भारत मिशन ने ग्रामीण विकास की दिशा में ठोस परिवर्तन लाया है। लगभग सभी गाँव ओ डी एफ घोषित हो चुके हैं और अधिकांश ने ओ डी एफ प्लस मॉडल को भी अपनाया है। इससे न केवल स्वच्छता में सुधार हुआ है, बल्कि स्वास्थ्य, सामाजिक व्यवहार, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण में भी सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।
जयपुर संभाग में ओ डी एफ प्लस गाँवों का प्रतिशत 90 से अधिक है। सीकर और झुंझुनूं सर्वाधिक सफल जिलों में हैं। दौसा और अलवर में अभी भी कुछ गाँव ओ डी एफ प्लस श्रेणी में शामिल नहीं हो पाए हैं, जो आने वाले समय में नीति–निर्माताओं और प्रशासन के लिए चुनौती हो सकती है। समग्र रूप से देखा जाए तो यह मिशन ग्रामीण क्षेत्रों में सतत विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

निष्कर्ष

स्वच्छ भारत मिशन ने ग्रामीण भारत के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में दीर्घकालीन परिवर्तन किए हैं। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि स्वच्छता केवल स्वास्थ्य का ही नहीं बल्कि कार्य क्षमता और सतत विकास का भी प्रमुख आधार है। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत शौचालय निर्माण, ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छ पेयजल उपलब्धता और जन जागरूकता अभियानों ने ग्रामीण क्षेत्रों में जलजनित एवं संक्रामक रोगों की दर को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण श्रमशक्ति की कार्यक्षमता एवं उत्पादकता में वृद्धि हुई है। स्वच्छता सुधारों ने न केवल स्वास्थ्य व्यय को घटाकर परिवारों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ किया, बल्कि सामाजिक व्यवहार, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक भागीदारी को भी प्रोत्साहित किया। इस प्रकार, स्वच्छ भारत मिशन ने सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति, विशेषकर स्वास्थ्य, स्वच्छता और पर्यावरणीय संतुलन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि स्वच्छ भारत मिशन केवल एक स्वच्छता अभियान नहीं बल्कि ग्रामीण भारत के लिए मानव पूजी निर्माण, जीवन स्तर सुधार और दीर्घकालीन सतत विकास की आधारशिला है। यह योजना आने वाली पीढियों के लिए स्वस्थ, सशक्त और आत्मनिर्भर ग्रामीण समाज की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन (2012). जल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य पर वैश्विक रिपोर्ट जेनेवाः डब्लू टी ओ प्रकाशन।
2. यूनिसेफ (2015). भारत में खुले में शौच एवं शिशु स्वास्थ्य पर रिपोर्ट नई दिल्लीः यूनिसेफ इंडिया।
3. कुमार, आर (2016), ग्रामीण भारत में स्वच्छ भारत मिशन का प्रभाव एक विश्लेषण, भारतीय जनस्वास्थ्य पत्रिका, खंड 8 (2), पृ. 45–521
4. शर्मा, एस. एवं वर्मा, ए. (2018). स्वच्छ भारत मिशन और ग्रामीण जीवन स्तर में परिवर्तन सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, खंड 12(1), पृ. 33–411
5. नीति आयोग. (2019). सतत विकास लक्ष्य और भारत वार्षिक प्रगति रिपोर्ट, नई दिल्ली भारत सरकार।
6. गुप्ता, पी. (2020), स्वच्छता सुधार और ग्रामीण आर्थिक विकास का परस्पर संबंध भारतीय आर्थिक समीक्षा, खंड 15(3), पृ. 27–361
7. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार. (2021). स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) प्रगति रिपोर्ट नई दिल्ली।
8. मिश्रा, आर. (2022) स्वास्थ्य, उत्पादकता और सतत विकास स्वच्छ भारत मिशन की भूमिका भारतीय प्रशासनिक अध्ययन, खंड 18(2), पृ. 59–681
9. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (2022) सतत विकास लक्ष्य और भारत चुनौतियाँ एवं अवसर नई दिल्लीः यूएनडीपी इंडिया।
10. सिंह, डी. (2023), ग्रामीण स्वच्छता और सामाजिक परिवर्तनः एक केस स्टडी समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, खंड 20(1), पृ. 14–221